शोध-सारांश

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का विषय है- *चन्द्रकिशोर जायसवाल की कहानियों में सामाजिक सरोकार (‘खट्टे नहीं अंगूर’ के विशेष सन्दर्भ में)* सामाजिक जीवन से जुड़ी विविध पहलुओं को गहराई से निरीक्षण कर उसे वास्तविक रूप में चित्रित करना सामाजिक कथाकार का दायित्व होता है। एक सामाजिक कथाकार होने के नाते चन्द्रकिशोर जायसवाल ने अपनी इस जिम्मेदारी को पूरी ईमानदारी से निभाया है। समाज की विभिन्न परिस्थितियों, समस्याओं, विसंगतियों आदि का सशक्त चित्रण चन्द्रकिशोर जायसवाल के कहानी संकलन ‘खट्टे नहीं अंगूर’ की कहानियों में बखूबी हुआ है। इस संग्रह में कुल चौदह कहानी संकलित है। प्रत्येक कहानी व्यापक सामाजिक तथ्यों से लबरेज है।

चन्द्रकिशोर जायसवाल ने ‘खट्टे नहीं अंगूर’ में संकलित कहानियों में गाँव तथा शहर दोनों के सामाजिक परिवेश का उद्घाटन जीवंत रूप से किया है। उन्होंने परंपरागत ग्रामीण सामाजिक परिवेश, संस्कृति एवं सभ्यता का यथाचित चित्रण प्रस्तुत किया है। गाँवों के शांत और रमणीय वातवरण, अतिथियों के आदर-सत्कार, त्योहारों का आयोजन, ब्राह्मणों का दंभ, ग्रामीण औरतों का स्वभाव आदि के बारे में उल्लेख कर कथाकार चन्द्रकिशोर जायसवाल जहाँ गाँव के परंपरागत रूप का दर्शन करवाते हैं, वहीं उनकी नजर निरंतर बदल रहे ग्रामीण परिवेश पर भी है। शीघ्रता से कस्बों का रूप लेता ग्रामीण परिवेश, ग्रामीणों के अंदर घर करता शहर की स्वार्थपरता और अवसरवादिता तथा उनमें खत्म होते सौहार्द आदि को कथाकार ने व्यापक सामाजिक संदर्भों के साथ व्याख्यायित किया है। नगरों व महानगरों के स्वार्थपरता, अवसरवादिता का भी चित्रण चन्द्रकिशोर जायसवाल की कहानियों में हुआ है। उन्होंने महानगर के लोगों की भाग-दौड़ वाली जिंदगी, उनकी व्यस्तता तथा आत्मकेंद्रियता का जिक्र ‘मानबोध बाबू’, ‘मैट्रिमोनियल तसवीर’ आदि कहानियों में यथार्थ रूप से किया है।

राजनीति, सामाजिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। समाज के विकास का ढ़ाँचा इसी पर निर्भर होती है। ‘खट्टे नहीं अंगूर’, ‘सुराख’, ‘समाधान’, ‘उठ भाई पतुकी सलाम भाई चुल्हा’ आदि कहानियों में चन्द्रकिशोर जायसवाल ने राजनीतिक परिवेश तथा उसकी विद्रुपताओं, विसंगतियों को उकेरा है। समाज सेवा के नाम पर अपना घर भरते राजनेताओं की दोहरी मानसिकता को उन्होंने गंभीरता पूर्वक दिखाया है। आजकल के दबंग नेताओं के धौंस तथा डरा धमकाकर लोगों से पैसा वसूलने आदि का जिक्र उन्होंने ‘सुराख’ कहानी में किया है। सत्ता हासिल करने, उसे बनाये रखने के लिए राजनेताओं के

छल, कपट, धोखा, षडयंत्र का भी खुलासा उन्होंने बखूबी किया है। नेताओं के आश्वासन भरी और लुभावने बातों तथा उनके दूषित आचरण का यथास्थिति उल्लेख 'खट्टे नहीं अंगूर' और 'समाधान' कहानी में गया किया है।

किसानों के स्वाभिमानी स्वभाव, उनकी आर्थिक समस्या, सोचनीय परिस्थिति तथा साथ ही उनके जीवन से जुड़ी विभीन्न समस्याओं का यथार्थ चित्रण चन्द्रकिशोर जायसवाल ने किया है। दिन पर दिन बढ़ती मँहगाई एवं सूदखोरों, महाजनों तथा बैंकों से कर्ज ले-लेकर तंगहाल होते किसानों का मार्मिक उद्घाटन 'समाधान' और 'मात' कहानी में कथाकार ने किया है। किसानों में बढ़ती आत्महत्या एवं किसानी छोड़ जीवन-निर्वाह हेतु मजदूरी करने को मजबूर किसानों का भी लेखक ने चित्रण किया है। साथ ही श्री जायसवाल ने भविष्य में किसान के अस्तित्व पर मंडराते खतरे पर गहरी चिंता व्यक्त की है।

उनकी कहानियों में तथाकथित आधुनिक समाज में मानवों के अंदर खत्म होती संवेदना का मार्मिक चित्रण हुआ है। मानवीय एवं व्यक्तिगत संबंधों, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों और जिम्मेदारियों से विमुख होते लोगों का कथाकार ने बखूबी अंकन किया है। चन्द्रकिशोर जायसवाल लोगों की संवेदनशून्यता के प्रति गहरी चिन्ता व्यक्त करते हैं और साथ ही मानवीय संवेदनाओं के संरक्षण पर भी जोर देते हैं।

आधुनिक परिवेश में बढ़ते एकल परिवारों तथा उनमें एक-दूसरे के प्रति कम होती भावनाओं का लेखक ने यथार्थ वर्णन किया है। कहानी 'मानबोध बाबू' और 'आस्था' में बुजुर्गों के प्रति होने वाले दुर्व्यवहार का कथाकार ने मार्मिक चित्र दिखाया है। जातिगत भेदभाव, जो की समाज में एक कुष्ठ रोग की तरह है और किसी न किसी रूप में उपस्थित होकर समाज के विकास में बाधक है, का जिक्र भी लेखक ने किया है। सरकारी तंत्रों के भ्रष्टाचार, अधिकारियों की घूसखोरी, रिश्वतखोरी तथा वहाँ होने वाले सुस्त गति से कार्य का उल्लेख 'घोड़ा और घास' कहानी में चन्द्रकिशोर जायसवाल ने व्यंग्यात्म रूप से चित्रित किया है।

बाढ़ की समस्या से हताहत होते लोगों का चित्रण कथाकार ने बहुत ही सजीवता के साथ किया है। उन्होंने यह भी बताया है कि बाढ़ अपने साथ अपार जान-माल को बहाकर ले जाती है, तकनीकों का विकास भी इसकी भयंकरता के सामने विफल होता है, क्योंकि हमारे देश की सरकार, प्रशासन सब

हाथ पर हाथ धरे इस समस्या का इंतजार करते हैं। इससे निजात पाने का कोई उपाय नहीं किया जाता। अगर कुछ योजनाएँ सरकार द्वारा बनायी भी जाती हैं तो वह फाइलों में बंद हो जाती हैं। जमीनी धरातल पर कोई कार्रवाई नहीं होती है। बाढ़ से जुड़ी घटनाओं एवं परिस्थितियों का ब्यौरा तथा राजनेताओं की झूठी हमदर्दी का अंकन 'उठ भाई पतुकी सलाम भाई चुल्हा' कहानी में कथाकार ने गंभीरतापूर्वक किया है। चन्द्रकिशोर जायसवाल ने धर्म के नाम पर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए धार्मिक कर्मकाण्ड करते पांडा का भी यथार्थ रूप दिखाया है। वे कहते हैं कि धर्म, जो मानव को जीवन में सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है, धर्म के ठेकेदारों ने उसे भी धन कमाने का एक माध्यम बना लिया है। 'समाधान', 'पुत्र पक्ष' आदि कहानियों में धर्म के विकृत रूपों को कथाकार ने बहुत ही सहजता से दिखाया है।

चन्द्रकिशोर जायसवाल के कहानी संकलन 'खट्टे नहीं अंगूर' की कहानियों में समसामयिक युग के समाज का वर्णन तो है, साथ में भविष्य के समाज की आहट भी है और विद्रुपताओं से निजात पाने की प्रेरणा भी है। कथाकार ने सहज एवं सरस भाषा में व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र से जुड़े लगभग तमाम पहलुओं को उद्घाटित किया है। सामाजिक समस्याओं और संवेदनाओं की चर्चा करके कथाकार एक ऐसे समाज की स्थापना का अभिष्ट रखता है, जहाँ सभी सम्मानपूर्वक सूख से रहें।

Research Summary

Subject for presented dissertation is 'Social interest in the story of Chandrakishore Jayaswal (With special reference 'Khatte Nahin Angoor').' It's responsibility of social storyteller to deeply observe various aspects of social life and its real depiction. Being a social storyteller Chandrakishore Jayaswal has successfully fulfilled the duty with utmost honesty. Various social circumstances, problems, anomalies etc. are strongly and well depicted in Jayaswal's story collection 'Khatte nahin Angoor'. There are fourteen stories compiled in this collection. Every story is full of extensive social facts and aspects.

Jayaswal has lively illustrated the social environment of rural and urban area in his story collection 'Khatte Nahin Angoor'. He has depicted the realistic conventional rural-social environment and culture and civilization. Jayaswal describes peaceful and delightful rural environment, hospitality to guests, arrangement of festivals, conceit of Brahmins, behavior of rural women etc. to depict the conventional from of villages as well as gradual changes that are taking place in rural environment. He has vastly described the rapid transformation of rural environment into town, urban selfishness and opportunism of cities and metropolitan has also been presented through his stories. He has factually described the helter-skelter life of urban folk, their busyness and self-centrality in his story 'Maanbodh Babu', 'Matrimonial Tasaveer'.

Politics is integral part of social organization. Development of society is based upon it. Jayaswal has engraved the political environment and its vileness, anomalies in his story 'Khatte Nahin Angoor', 'Surakh', 'Samadhaan', 'Uth Bhai

Patuki Salam Bhai Chulha' etc. he has seriously depicted the double standard character of politicians who fulfill their selfness purpose in the name of social services. He has mentioned the present-day sturdy politicians who threaten commoners for the sake of money in his story 'Surakh'. Treachery, unethical deed, conspiracy of politicians in bid to be in power has also been exposed by him. Fake assurance, fascinating talks and wickedness of politicians are well described in the story 'Khatte Nahin Angoor' and 'Samadhaan'.

Jayaswal has well depicted the self-respecting nature of peasants, their economical-crisis, misery as well as various problems associated with their life. He has produced heart melting picture of rising inflation, miserable condition of peasants due to hefty and injudicious loan taken from usurer in his story 'Samadhaan' and 'Maat'. He has also depicted the rising suicide rate in farmers and helpless condition which lead to change their occupation as a laborer. He has also expressed deep concern for the existence of farmers in future.

He has produced heart-touching depiction of the ending sympathy and sensitivity in modern days human. Human and personal relationship, deviation from social as well as national duties and responsibilities etc. have been panned clearly by him. Jayaswal has expressed deep concern for insensitivity among people and stressed on conservation of human sensitivity.

Writer has factually described the raising trend of nuclear family and declining feeling of belongingness with each other. Writer has also portrait the misconduct against the elderly through his heart melting story 'Manbodh Babu" and 'Aastha'. He has considered the generic discrimination as leprosy in our society and some hoe becomes obstacle for social development. Unmoral practices like wide spread corruption in government-system, kick back to officers, bribery,

slow progress of development works due to red-tapism have also been depicted satirically by Jayaswal in his story ‘Ghora or Ghas’

The storyteller has illustrated with very liveliness about the casualties of people from the flooding problem. He has also told that floods carry heavy lives and property with them, the development of techniques also fails in front of its ferocity, because the government of our country, the administration, hands over all hand, awaiting the problem. There is no way to get rid of it. If some plans are made by the government then they are only in the closed files. No action is taken on the ground level. Storytelling of events related to the flood and the false sympathy of the politicians is done by the storyteller seriously in the 'Uth Bhai Patuki Salaam Bhai Chulha' story. Chandrakishore Jayaswal has also shown the true nature of Panda, a religious ritual for his selfishness in the name of religion. They say that religion, which inspires human beings to walk on the path of life, the contractors of religion have made this a medium of making money. In the stories like ‘Samadhaan’, 'Putra Paksha', the storytellers have been shown very easily with the distorted forms of religion.

In his story compilation ‘Khatte Nahin Angoor’, Jayaswal has described the contemporary society as well as catch a glimpse of upcoming society and incourage us to get rid of vileness. Storyteller, in his simple and fluent language, has depicted the various aspects of personal, family, society and nation to great extent. Writer has penned various social problems and humane sensitiveness in bid to build such a society where everyone can live with dignity and happiness.